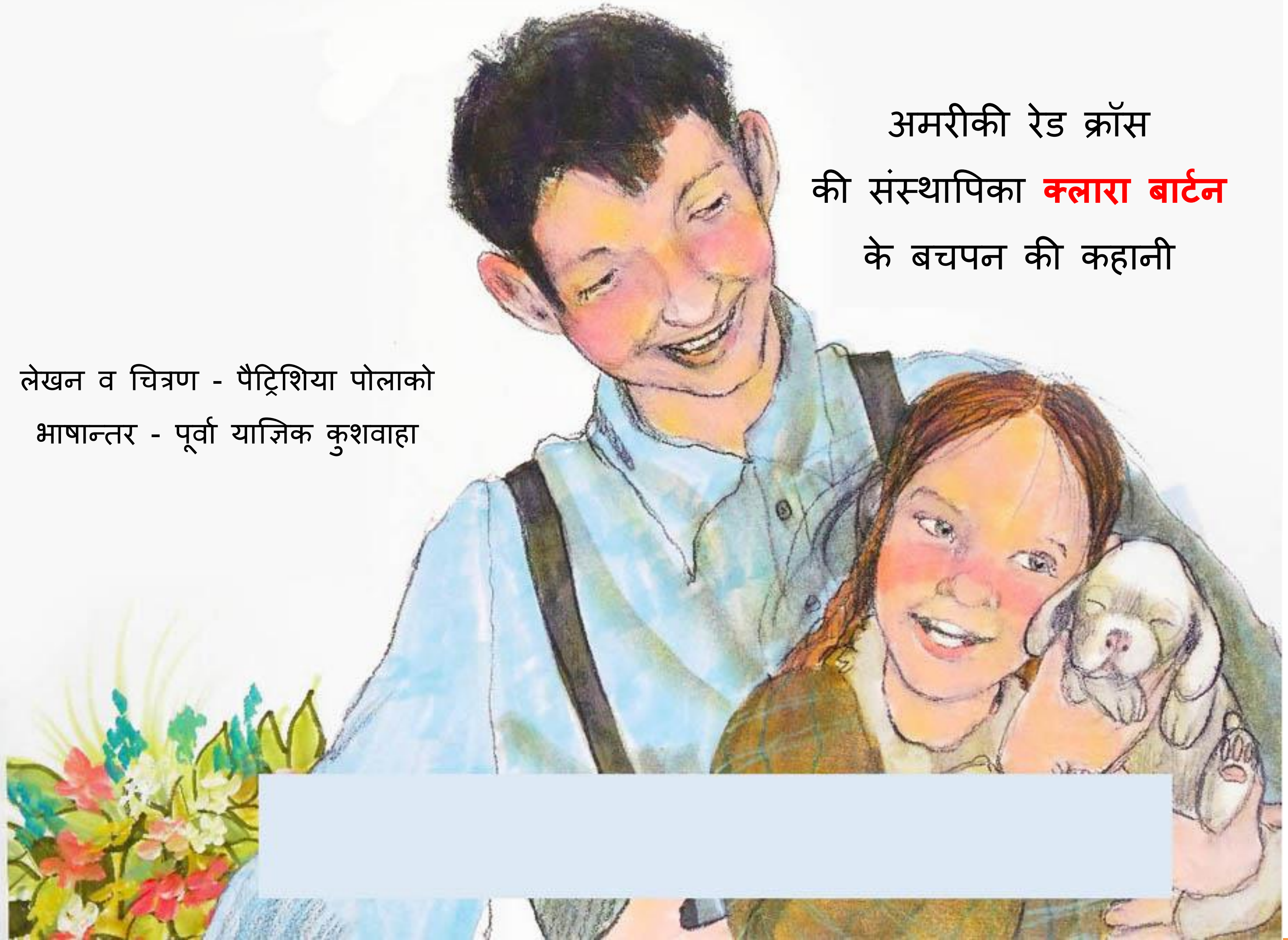
क्लारा और डेवी

अमरीकी रेड क्रॉस
की संस्थापिका **क्लारा बार्टन**
के बचपन की कहानी



लेखन व चित्रण - पैट्रिशिया पोलाको
भाषान्तर - पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

क्लारा एक अनूठी बच्ची थी। उसके सबसे अच्छे दोस्त थे जानवर और फूल!

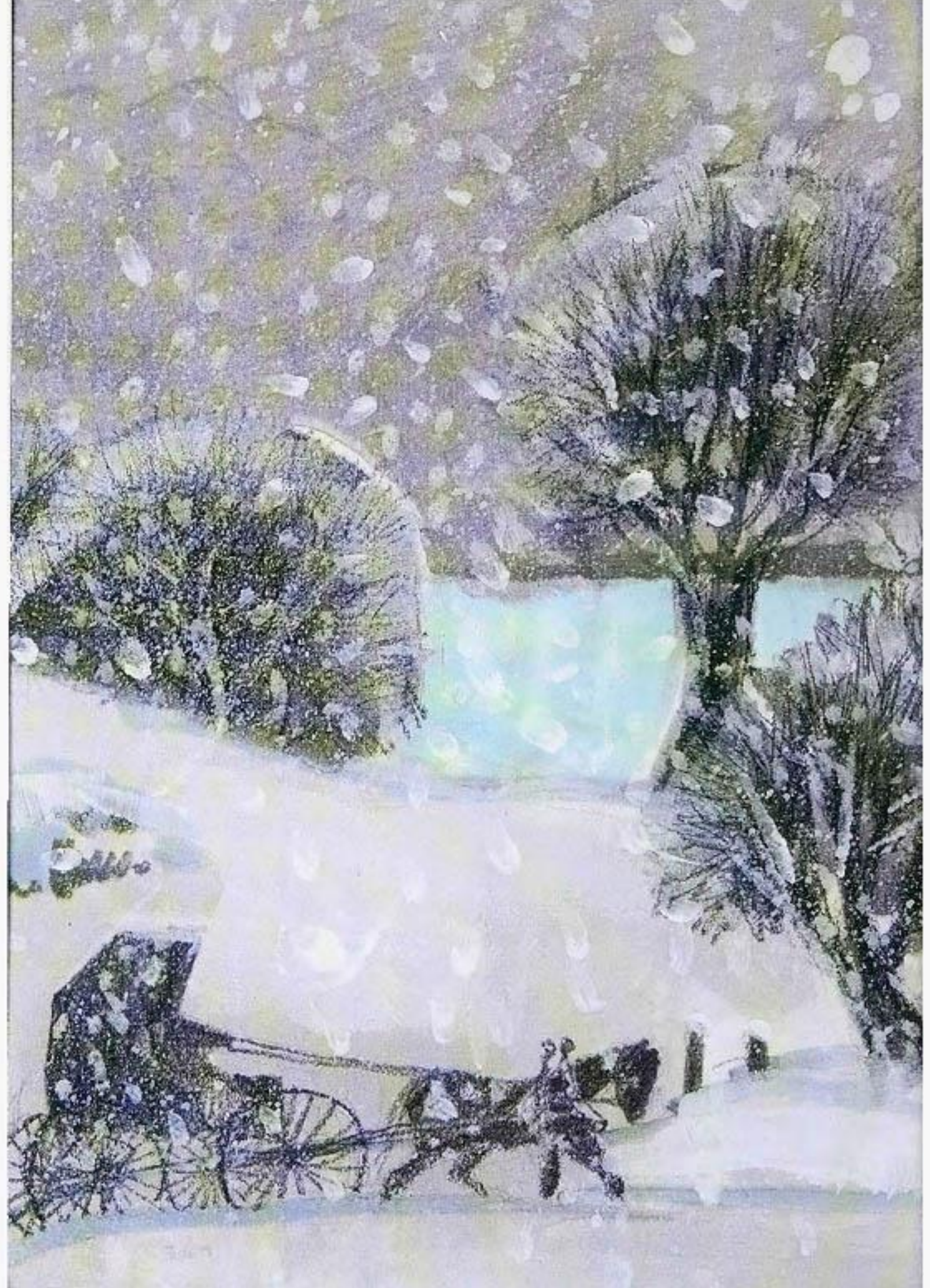
जीव-जन्तुओं के साथ उसका ख़ास रिश्ता था। माटी से उगने वाला सौन्दर्य उसे बेइन्तहा खुशी देता था। जब किसी पड़ोसी किसान के सूअर या गायें बीमार पड़ जाते, या उनकी फसलों को कोई रोग लग जाता, क्लारा को हमेशा यह पता होता कि उस सूरत में करना क्या चाहिए। क्लारा की ऊर्जा असीमित थी। वह गाय के चेहरे जैसे ऊँचे उठे पहाड़ों पर दौड़ती चढ़ सकती थी और गेहूँ की खड़ी फसल के बीच से धकिया कर निकल सकती थी।

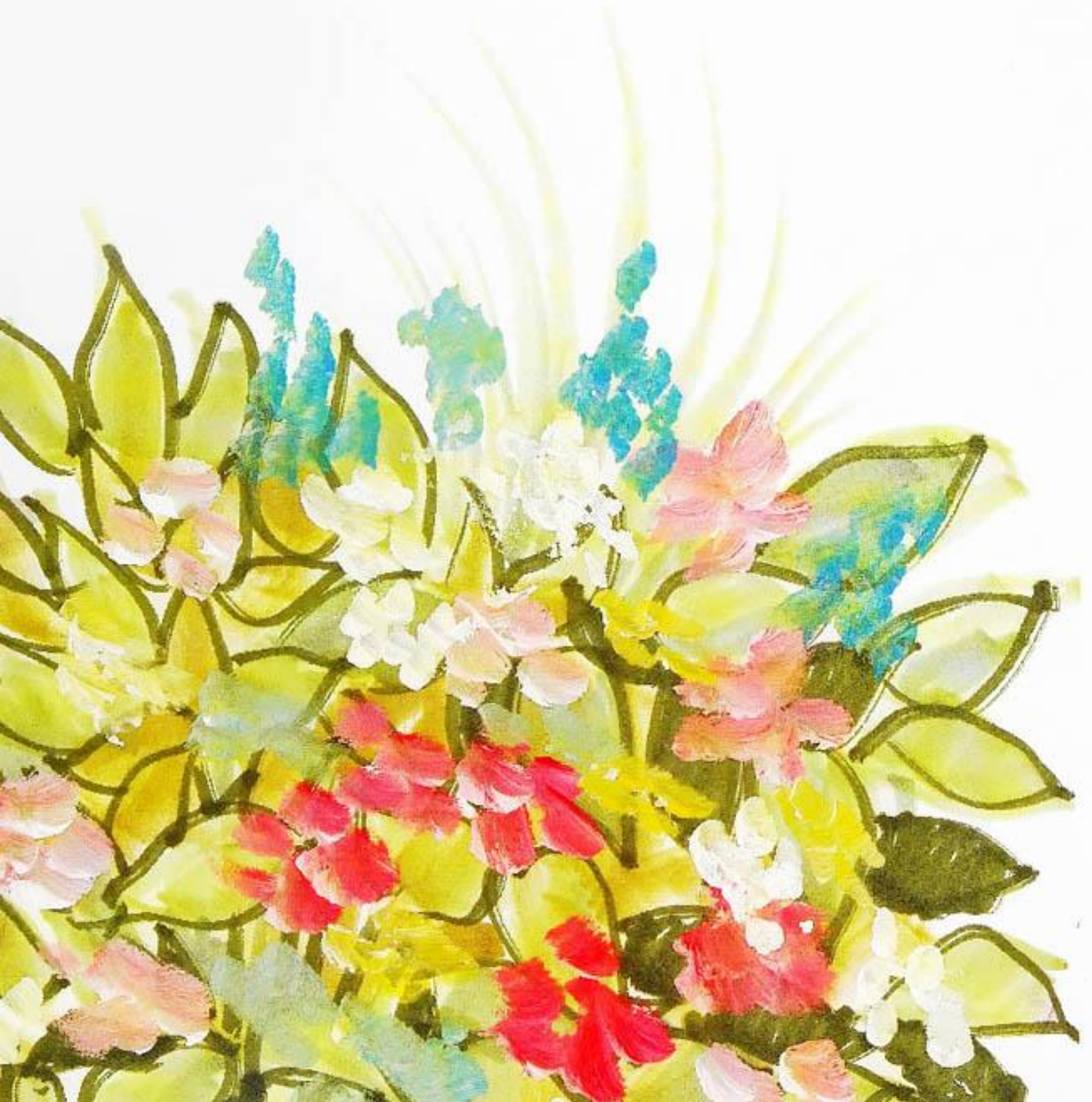
पर जब वह बोलने के कोशिश करती उसके शब्द ठीक नहीं निकलते थे। वह चाहे जितनी कोशिश क्यों न करती, उसकी तुतलाहट जाती ही नहीं थी।

क्लारा का बड़ा भाई डेवी जानता था कि उसकी बहन गुणवान है। जब भी लोग क्लारा के उच्चारण का मज़ाक उड़ाते, डेवी उसे हमेशा याद दिलाता कि उसे जीव-जन्तुओं के उपचार का अनूठा तोहफ़ा मिला हुआ है।

डेवी अपनी बहन से कहता, "तुम किसी दिन एक महान महिला बनोगी।" और ठीक यही हुआ भी। क्लारा बार्टन चिकित्सा व उपचार के क्षेत्र में मशहूर हुईं और उन्होंने अमरीकी रेड क्रॉस की स्थापना की।

यह क्लारा बार्टन की सच्ची कहानी है। वे पैट्रिशिया पोलाको की पूर्वज थीं। पोलाको ने इस कथा के साथ अपने परिवारिक वंशवृक्ष से विरासत में पाई कथाओं का लेखन और चित्रण जारी रखा है।





क्लारा और डेवी

अमरीकी रेड क्रॉस की संस्थापिका

क्लारा बार्टन के बचपन की कहानी

लेखन व चित्रण - पैट्रिशिया पोलाको

भाषान्तर - पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मेरे ममेरे भाई स्टीवन बार्टन-गा की स्नेह स्मृति को

और उनके छोटे भाई डेविड बार्टन-गा को समर्पित

- पैट्रिशिया पोलाको

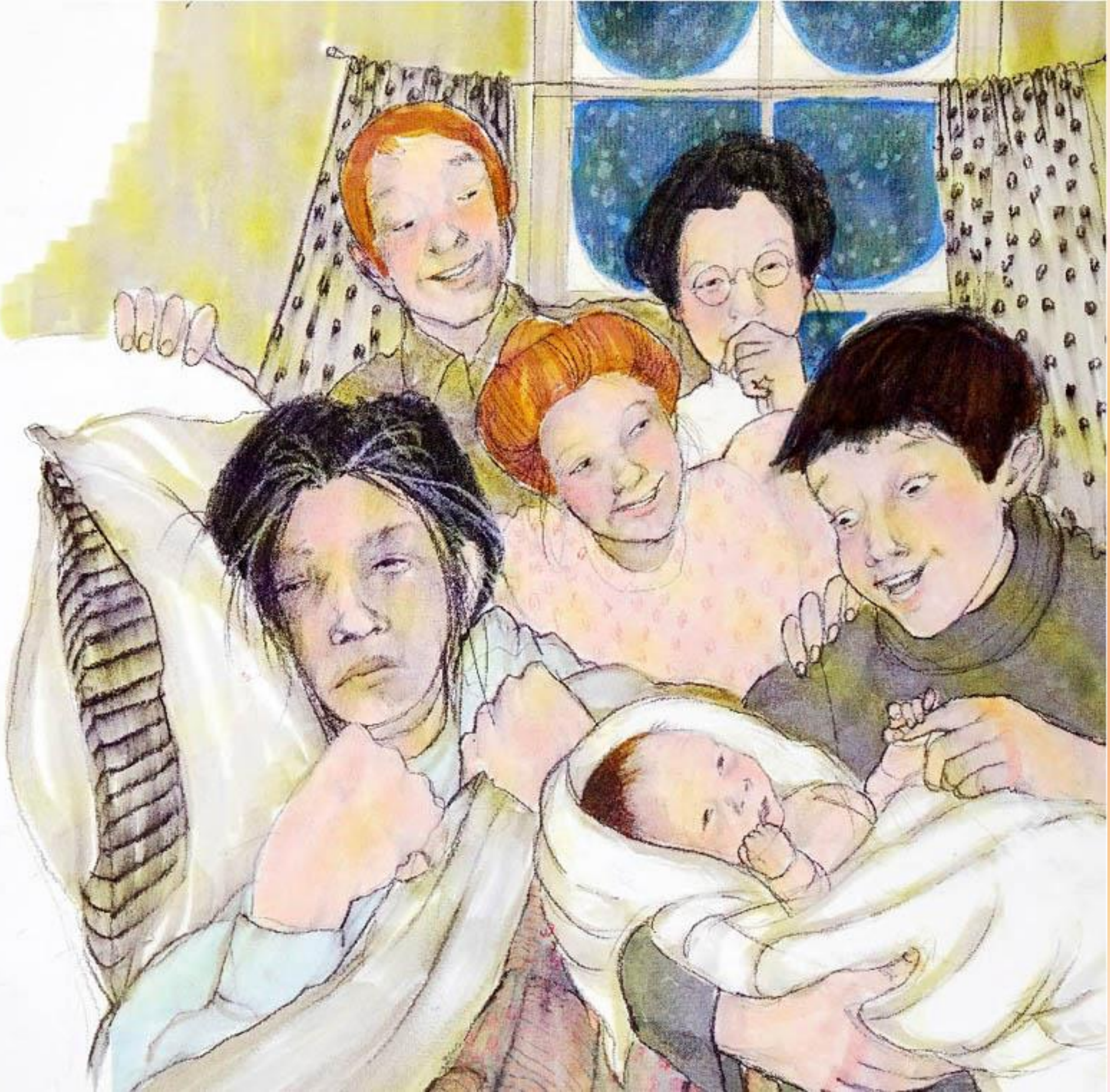
क्रिसमस की कुड़कुड़ाती ठंडी सुबह को नॉर्थ ऑक्सफोर्ड, मैसाच्युसेट्स में एक जोरदार तूफान आया। वो 1821 का साल और क्रिसमस का दिन था।

माँ अपने पाचवें बच्चे के जन्मने इंतजार कर रही थीं। उससे पहले का बच्चा दस साल पहले हुआ था। माँ की तबियत काफी नाजुक थी।



क्रिसमस के उस दिन एक ख़ास तोहफ़ा आया। पूरा परिवार माँ के बिस्तर के पास नई बिटिया का स्वागत करने को इकट्ठा था। नवजात नन्ही दुशाले में लिपटी माँ के पास बिस्तर पर थी। "मैं इसका नाम क्लैरिसा रख रही हूँ," माँ ने कमज़ोर स्वर में कहा, और नवजात को अपनी सबसे बड़ी बेटी डॉली को पकड़ाया। क्लैरिसा की दूसरी बड़ी बहन सैली, उसके बड़े भाई स्टीवन ने भी उसे बारी-बारी गोद लिया। तब उसे डेवी ने थामा, जो उनमें सबसे छोटा भाई था, और अर्से से उसके आने का इन्ज़ार कर रहा था। वह नई नन्ही को निहार बड़ा खुश था। उसने नन्ही को बाँहों में झुलाया, नन्ही ने छोटी-छोटी उंगलियों से उसकी एक उंगली पकड़ ली। डेवी खुशी से हंस पड़ा।

"वाह क्या पकड़ है। शर्त रही कि वह कुछ ही समय में पा के नए घोड़ों को प्रशिक्षित करने उनकी नंगी पीठों पर बैठ उन्हें पालतू बनाने लगेगी!" डेवी ने खुशी से गमकते कहा। "पर यह क्लैरिसा के बदले क्लारा ज़्यादा लगती है।" उस दिन से नन्ही को सब यही कहने लगे - क्लारा।



दिन गुज़रते गए, माँ बीमारी से कमज़ोर होती गईं। जल्द ही नन्ही क्लारा की परवरिश की ज़िम्मेदारी डॉली पर आन पड़ी।

पर डेवी नन्ही बहन पर जान छिड़कता था, और वह तो मानो डेवी को पूजती ही थी। वह जहाँ कहीं जाता, वह हमेशा उसके पीछे होती। अगली सर्दियों तक, क्लारा ठीक से चलना सीखती उसके भी पहले, डेवी ने उसे घोड़े की नंगी पीठ पर बैठना सिखा दिया। और जब उसने चलना सीखा, वह सीधे दौड़ ही लगाने लगी!

डेवी ने उसे पेड़ पर चढ़ना, जुगनुओं को पकड़ना, गहरे गड्ढों को लांघना और पूरे दम से मिट्टी के ढेले फेंकना सिखाया। वह गाय के चेहरे से ऊपर उठने वाले पहाड़ों पर दौड़ती जा सकती थी और गेहूँ की खड़ी फ़सल के बीच धकिया कर निकल सकती थी।

डेवी हमेशा उसके साथ होता।



पर क्लारा को सबसे ज़्यादा अच्छा तब लगता था जब वह और डेवी नदिया किनारे विशाल शाहबलूत के पेड़ से लटके झूले पर बैठ जंगली फूलों के मैदान पर झूलते।

“और ऊपर डेवी!” वह चीख कर कहती।

“अगर और ऊपर गए तो हम बादलों में छेद कर देंगे और मुझे तुम्हारे लिए चाँद का एक टुकड़ा तोड़ना पड़ेगा!” डेवी हंस कर कहता।

जब क्लारा जंगली फूलों के मैदान में दौड़ती वह हरेक फूल को सूंघने की कोशिश करती। क्लारा और डेवी घर ले जाने के लिए फूल चुनते। लौटते वक़्त वे तबेले में रुकते। जानवरों को खिलाने-पिलाने और दूसरे कामों में भी क्लारा डेवी की मदद करती।

क्लारा का प्रकृति और पशुओं से वैसा ही क़रीबी रिश्ता था जैसा फूलों का सूरज से होता है। उनके साथ उसका अपना ही खास तरीका भी था। माटी से उपजने वाली चीज़ों से उसे आनन्द मिलता था। यह सब करना क्लारा के लिए बड़ा ही सहज, बड़ा ही आसान था।

पर क्लारा जब बोलती उसे बड़ी मशक्कत करनी पड़ती। उसके शब्द साफ़-सही निकलते ही नहीं थे। घोड़ा “थोड़ा” बन जाता और स्नैपड्रैगन (कुकर फूल) “थ्नैपड्रैगन”!





एक दिन जब डेवी तहख़ाने में गांठ गोभी रख रहा था, उसने क्लारा को एक कोने में दीवार की ओर मुँह किए, खड़ा पाया।

"क्लारा तुम यहाँ अकेले, अंधेरे में क्या कर रही हो?" डेवी ने हाथ पकड़ उसे सीढ़ियों की ओर ले जाते हुए पूछा।

"डॉली ने मुझे सज़ा दे यहाँ भेजा है। वह कहती है कि मुझे तहख़ाने में ही रहना होगा," क्लारा ने सुबकते हुए कहा। डेवी उसे रसोई में घसीट लाया। डॉली उसे देखते ही बेहद नाराज़ हो गई।

"बच्ची को फ़ौरन नीचे ले जाओ! इसे सज़ा दी जा रही है," डॉली ने डेवी को फटकारा।

"पर किस बात की?" डेवी ने आपत्ति की।

"यह ठीक से बोलना ही नहीं चाहती। महाआलसी है! वह शब्दों का सही उच्चारण करने से इन्कार करती है!"

डेवी ने क्लारा को गले लगाया। "मेरे साथ चलो क्लारा। मुझे तुम्हें तबेले में कुछ दिखाना है।



क्लारा तबेले तक रोती-सुबकती गई।

"मैं ठीक से बालने की पूरी कोशिश करती हूँ, डेवी। पर मेरी ज़बान वह करती ही नहीं जो डॉली उससे करवाना चाहती है," क्लारा ताव में आ हकलाती हुई बोली।

डेवी उसे एक नांद तक ले गया। उसने वहाँ रखी फूस हटाई। क्लारा को तब फूस के नीचे एक नवजात पिल्ला दिखा। उसने आँखें पोंछीं। तब पूछा, "इसकी माँ कहाँ है?"

"वह तो भाग गई," डेवी ने जवाब दिया। "पर यह नन्ही बीमार है। अगर इसकी तीमारदारी न की जाए तो यह अधिक ज़िन्दा नहीं रहेगी।"

"ज़िन्दा नहीं रहेगी?" क्लारा ने फुसफुसा कर पूछा।

"मैं इसकी देखभाल करूंगी," क्लारा ने वादा किया। "यह तो एक छोटे-से बटन जैसी प्यारी है। मैं यही बुलाऊंगी इसे - बटन!" क्लारा ने उत्साह से कहा।

क्लारा की देखरेख में बटन पलने-बढ़ने लगी। क्लारा का उससे लगाव दिन-ब-दिन बढ़ता गया। बटन उसे बेइन्तहा खुशी देती थी। पर इसके बावजूद उसकी तुतलाहट को लेकर मज़ाक उड़ाए जाने ने उसे सबसे दूर कर दिया। वह अन्दर सिमटने लगी और ज़्यादातर लोगों से शर्माने और डरने लगी। जब भी डॉली क्लारा के स्कूल जाने की चर्चा छेड़ती वह तबेले में जा छिपती।



जितना ज़्यादा समय क्लारा तबेले में बटन के साथ बिताती, उतना ही अधिक उसका लगाव बाकी जानवरों के साथ भी बढ़ता गया। वह उन्हें घंटों तक देखती, उनके तौर-तरीकों पर ग़ौर करती। वह उनके बारे में सब कुछ सीखने लगी। पर बीमार जानवरों पर वह ख़ास ध्यान देती। उसके हाथों में उपचार की ताकत थी। जब वह उनकी तीमारदारी करती उसका दिल खुशी से गा उठता था। पशुओं के सामने वह खुद को बहादुर और आत्मविश्वास से लबरेज़ महसूस करती। आख़िर इन पशुओं को इससे कोई फर्क जो नहीं पड़ता था कि वह तुतलाती है या नहीं।

पर कुछ ही समय बाद डॉली के आग्रह पर क्लारा का दुःस्वप्न सच्चाई में बदला। क्लारा को स्कूल भेजा गया। वह स्कूल में इस कदर सहमी रहती कि बिरले ही मुँह खोलती। पर जब भी वह कुछ कहने की हिम्मत जुटाती, सब उसका मज़ाक उड़ा हंसते।

स्कूल के खेल मैदान में लड़कियाँ उसे घेरतीं और उसका मखौल उड़ातीं।

"तुम ठीक से बोलती क्यों नहीं?" उनमें से एक ने छेड़ा।

"तुम साँप के फुफकारने जैसी आवाज़ करती हो," दूसरी ने कहा।

"उसे साँप कहते हैं, 'थाँप' नहीं!" तीसरी ने चिढ़ाया।

वे सब ठठा कर हंसी।

क्लारा ने मिट्टी का एक ढ़ेला उठाया और उनकी ओर फेंका। तब जितनी तेज़ी से हो सका घर की ओर दौड़ी।

डेवी को क्लारा तबेले में सुबकते मिली।

"सब मेरा मज़ाक उड़ाते हैं, डेवी। मेहरबानी से मुझे कभी वापस स्कूल जाने को नहीं कहना!" क्लारा ने चिरौरी की।

"आज रात मैं पा से बात करूंगा। हम तुम्हें यहाँ, घर पर ही पढ़ा सकते हैं। तब कोई तुम्हारा दिल नहीं दुखा सकेगा," डेवी ने उसे आश्वासन दिया।



डेवी अपने वादे का पक्का रहा। उसने पा को मना लिया कि क्लारा की शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हो।

पूरे परिवार ने इसमें क्लारा की मदद की। स्टीवन ने क्लारा को अंक और गणित सिखाया। सैली और डॉली ने क्लारा की मदद एक बेहतरीन पाठक बनने में की। डेवी ने उसे नक्शे पढ़ना और प्रकृति के करिश्मों के बारे में सिखाया।

जल्द ही क्लारा किसी भी संख्या को जोड़ना, घटाना, गुणा करना और भाग देना सीख गई। पा के आले में रखी लगभग सभी क़िताबें उसने पढ़ डालीं।

वह डेवी के साथ गाँव के क़िताबघर जाती और वहाँ से प्रकृति और पशुओं संबंधी क़िताबें पढ़ने को लाती। वे हमेशा जंगल के रास्ते घर लौटते जहाँ जंगली फूलों की भरमार हो।

डेवी के कारण क्लारा सभी फूलों के नाम सीख गई। डेवी को अपनी बहन पर अचरज होता। जंगली गिलहरियाँ, गौरैया आदि क्लारा के पास यों चले आते मानो उसका अभिवादन कर रहे हों। कोई पशु उससे डरता न था।

वह गुलबहार और तारक फूलों से मीठी आवाज़ में बतियाती। जब क्लारा उनके पास होती लगता कि वे ज़्यादा चमकदार हो, तन कर खड़े हैं। क्लारा उन्हें चुन छोटे गुलदस्ते बनाती। वह उन्हें टसी-मसी कहा करती थी।



सर्दी का मौसम आया। और साथ आई ठण्ड। पर इससे क्लारा की खुली जगह में होने की पसन्दगी कम नहीं हुई। एक सुबह स्कूल से लौट रहे लड़कों के एक झुण्ड ने क्लारा के घर की रसोई के दरवाज़े पर दस्तक दी।

"हमें स्कूल में तुम्हारी कमी खलती है, क्लारा," उनमें से एक ने कहा।

"हमने किसी को इतनी दूर तक मिट्टी का ढ़ेला फेंकते नहीं देखा," दूसरा बोला।

"तुम हवा की सी तेज़ी से दौड़ती हो!" तीसरे ने जोड़ा।

क्लारा को लगा कि वे सब एक साथ बोल रहे हैं। "क्लारा क्या तुम हमारे साथ स्केटिंग और स्लैजिंग (बर्फ़ फिसलनी) के लिए चल सकती हो?"

क्लारा ने जवाब देना चाहा, पर उससे देर हो गई।

डॉली ने फुफकार कर कहा, "यह कतई ठीक नहीं है। इज़्ज़तदार घरों की लड़कियाँ जंगली गुंडों के साथ गाँव भर में घूमती नहीं फिरतीं!"

डॉली आगे और आपत्तियाँ उठाती उसके पहले क्लारा दरवाज़े से निकल भागी। डेवी उसके पीछे था। उसने देखा कि क्लारा कई महीनों बाद दूसरे हमउम्र बच्चों के साथ मौज-मज़ा कर रही है।

अचानक एक लड़के की एड़ी मुड़ी और वह बर्फ़ पर गिर गया। पर क्लारा को मालूम था कि क्या उपाय करना है। उसने लड़के के चोटिल पैर को सावधानी से रगड़ा-मासला।

"क्या पैर टूट गया है," लड़के ने डरते हुए सवाल किया।

"नहीं, अब तो एड़ी बिलकुल नई-सी है," क्लारा ने जवाब दिया।

डेवी की ही तरह उन लड़कों ने भी देखा कि क्लारा के हाथों में उपचार का जादू है। उस दिन से वे क्लारा के पक्के दोस्त बन गए।



क्लारा के करिश्माई हाथों और जीव-जन्तुओं के साथ उसके खास तौर-तरीकों की बात गाँव भर में फैल गई। अड़ौसी-पड़ौसी उसे अपने मवेशियों का इलाज करने बुलाने लगे। अब क्लारा क़िताबघर से पशु-चिकित्सा की क़िताबें उधार लाने लगी।

हुआ यों कि अभ्यास करते-करते क्लारा बछड़ों को पैदा करने, गायों का उपचार करने, भेड़ों की टूटी हड्डियाँ जोड़ने में माहिर होती गई।

साथ ही पेड़-पौधों को उगाने में भी उसने उतनी ही महारत हासिल कर ली, जितनी जानवरों के उपचार करने में उसकी थी। हर बसन्त क्लारा का फूल-बागान गाँव के लोगों की ईष्या का कारण बनता।

तकरीबन इसी समय डॉली को एक रहस्यमय रोग हो गया। हालांकि डॉली हमेशा क्लारा को बुरा-भला कहती रहती थी, उसे बीमार देखना क्लारा के लिए ऐसा था मानो अपनी दूसरी माँ को भी खो देना। डॉली की बीमारी ने क्लारा को क़िताबघर की मानव-चिकित्सा संबंधी क़िताबों को पढ़ने और हर तरह के रोग का उपचार जानने-सीखने के संकल्प को मज़बूत बना दिया।

पर बीच-बीच में मज़ा करने के लिए, स्कूल के लड़कों के साथ क्लारा अब भी गाँव भर में दौड़ा करती थी।

डेवी हमेशा क्लारा के साथ होता, यह सुनिश्चित करता कि कोई उसका मज़ाक न उड़ाए।



एक दिन क्लारा किसी पड़ौसी के सूअरों का हैजे का इलाज करने के बाद घर लौट रही थी कि उसने अपने परिवार के कुछ खेत-मज़दूरों को डेवी को तबेले से उठा ले जाते देखा।

“क्लारा!” बूढ़े बैन ने कहा। “डेवी तबेले की सबसे ऊँची शहतीर से नीचे गिर गया।”

“उसे गंभीर चोट लगी है!” दूसरे ने हाँफते हुए जोड़ा।

क्लारा ने देखते ही समझ लिया कि डेवी के दोनों पैर टूट चुके हैं।

“उसे बड़ी ही सावधानी से ले चलना,” क्लारा ने अपनी आवाज़ को साध कहा।

क्लारा को मालूम था कि उसे करना क्या है। उसने डेव का पलंग नीचे उतरवा उसे बैठक में लगवाया। उसे पता था कि डेव को अलाव की गर्मी और खिड़की से आती धूप की ज़रूरत होगी।



जब डा. रेनॉल्ड्स आए और उन्होंने डेवी की जाँच की। तब उन्होंने सवाल किया, ''मरीज़ को किसने संभाला?''

''मैंने,'' क्लारा ने शर्म से हिचकते हुए कहा।

''बिटिया तुमने ठीक वही किया जो मैं करता,'' डॉक्टर ने कहा।

उन्होंने डेव की हड्डियाँ ठीक से बैठाईं, मरहम पट्टी की। उस रात जब वे गए, क्लारा उनके हाव-भाव से समझ गई कि उन्हें यह उम्मीद नहीं थी कि डेव इस हादसे से बच सकेगा।

पर क्लारा ने डेवी की तीमारदारी कर उसे स्वस्थ करने की ठान ली। उसकी बेहतरीन देखभाल के चलते डेवी उस डरावनी रात को गुज़ार सका। इसके बाद दिन-ब-दिन, महीने-दर-महीने क्लारा सूरज उगने से लेकर उसके ढ़लने तक डेवी के पास होती।

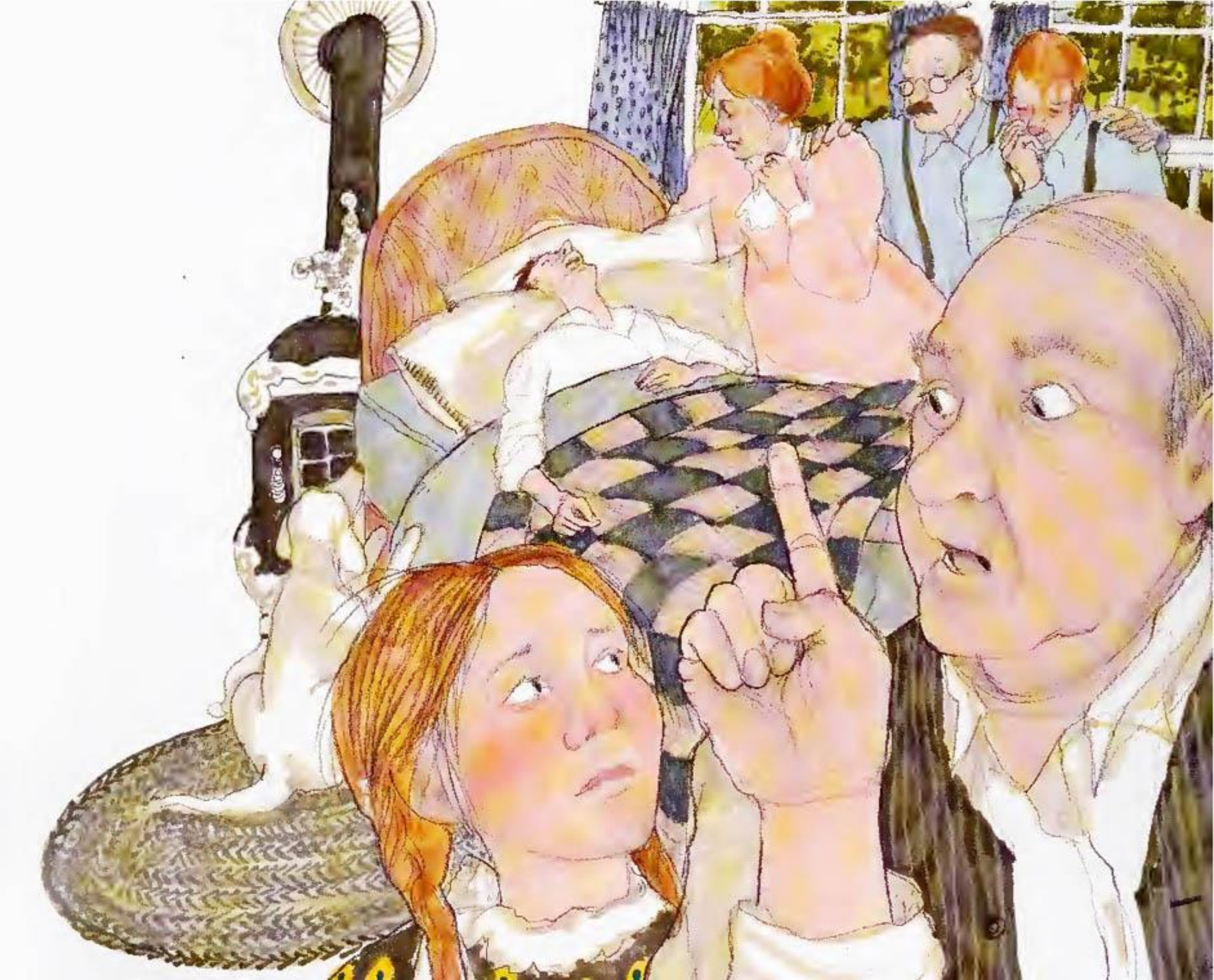
वह हमेशा उसकी उम्दा तीमारदारी करती, उसे दिलासा दे हौसला बढ़ाती।

तीन बसन्त आए और गए। डेवी की हालत में धीमे-धीमे सुधार आता गया। क्लारा उसकी प्रगति के हर पड़ाव पर पैनी नज़र रखती रही।

जिस दिन उसने पहली बार पैर हिलाए।

जिस दिन उसने बिस्तर छोड़ा और खिड़की के पास रखी कुर्सी पर उसे बैठाया गया।

पर आखिरी बाधा अब भी लांघनी बाकी थी। डेवी को फिर से अपने पैरों से चलने की कोशिश करनी थी।



क्लारा हर दिन अपने प्यारे भाई को खड़े होने और कुछ छोटे कदम चलने को उकसाती। वह डेवी के लिए गीत गाती। उसकी पसन्दीदा क़िताबें पढ़ कर सुनाती। उसकी मेज़ पर ताज़े फूलों का गुलदस्ता रखती।

जब फूल मुरझाने लगते वह अकेले ही नदी किनारे जाती, यह सोचते कि क्या डेवी कभी फिर से उसके साथ वहाँ तक चल भी पाएगा या नहीं।

पर दुखद यह था कि हर दिन पिछले के समान गुज़रता। डेवी चलने की कोशिश करने की हिम्मत जुटा ही नहीं पा रहा था।





एक दिन क्लारा ने डेवी का हाथ अपने हाथों में लिया और उसके सामने घुटनों के बल बैठी।

"डेवी मैं जानती हूँ कि तुम चल सकते हो। तुमने हमेशा कहा है कि मेरे हाथों में लोगों को ठीक करने का जादू है। अगर तुम चलने की कोशिश ही नहीं करोगे, तो मैं तुम्हारी इस बात पर कभी विश्वास नहीं करूंगी।"

डेवी ने क्लारा की ओर हाथ बढ़ाया पर वह उठ न सका।

"डेवी अगर मैं चल पाने में तुम्हारी मदद नहीं कर सकती तो मैं बिलकुल बेकार, बिलकुल निकम्मी हूँ।"

क्लारा बैठक से निकली और तबेले की ओर भागी।

क्लारा अकेली बैठी सुबक रही थी। अचानक उसे तबेले की देहरी पर एक छाया दिखी। सामने डेवी खड़ा था और उसके हाथों में जंगली फूलों का एक गुच्छा था।

डेवी ने धीमे स्वर में कहा, "मैं नदी किनारे गया, ये फूल मैंने खुद चुने। अपने दो पैरों की मदद से।"

क्लारा ने आँखें झपकाईं। उसकी आँखें झूठ नहीं कह रही थीं। डेवी सचमें उसके सामने था!

"तुम्हें सचमें उपचार का तोहफ़ा मिला हुआ है। यह गुण तुम्हारे दिल, तुम्हारे हाथों में बसा हुआ है। मेरी ज़िन्दगी वापस लौटाने के लिए शुक्रिया, मेरी बहन।"

डेवी सावधानी से अपनी छेटी बहन की ओर बढ़ा। दोनों गले मिले। दोनों ने खुशी के आँसू बहाए।

डेवी ने कहा, "किसी दिन तुम एक महान स्त्री बनोगी क्लारा!"





क्लारा बार्टन, 29 वर्ष की आयु में

डेवी ने क्लारा के बारे में बिलकुल सही भविष्यवाणी की थी। उसमें सचमें लोगों का उपचार करने का, तीमारदारी से उन्हें स्वस्थ बना देने का हुनर था। वे चिकित्सा क्षेत्र के इतिहास में सबसे महान स्त्रियों में एक बनीं - क्लारा बार्टन।

पैर ठीक होने के सालों बाद, यानी जब डेवी और क्लारा काफ़ी बड़े हो गए, डेवी जहाँ कहीं भी होता, हर बसन्त अपनी बहन को एक गुलदस्ता ज़रूर भिजवाता। यह गुलदस्ता स्वस्थ होने, बाधाओं को पार करने, बीमारी और पीड़ा पर विजय पाने का प्रतीक बन गया था।

क्लारा बार्टन अपने समय की एक मशहूर उपचारक और चिकित्सा पेशेवर बनीं। वे शिक्षिका, व्याख्याता, नर्स और विश्व भर में मानव अधिकारों की प्रवक्ता बनीं। 21 मई 1881 में उन्होंने अमरीकी रेड क्रास की स्थापना की। उनकी मुलाकात अनेक राजाओं, रानियों, राष्ट्रपतियों से हुई। इतिहास उन्हें अपनी शताब्दी की सबसे सम्मानित और प्रिय महिला करारता है।

अमरीकी गृहयुद्ध के दौरान घायल सैनिकों की सेवा के चलते क्लारा को "रणभूमि का फ़रिश्ता" कहा जाता था। अपने लम्बे और शानदार जीवन में उन्होंने विश्व स्वास्थ्य संगठन और चिकित्सा के पेशे को प्रभावित किया।

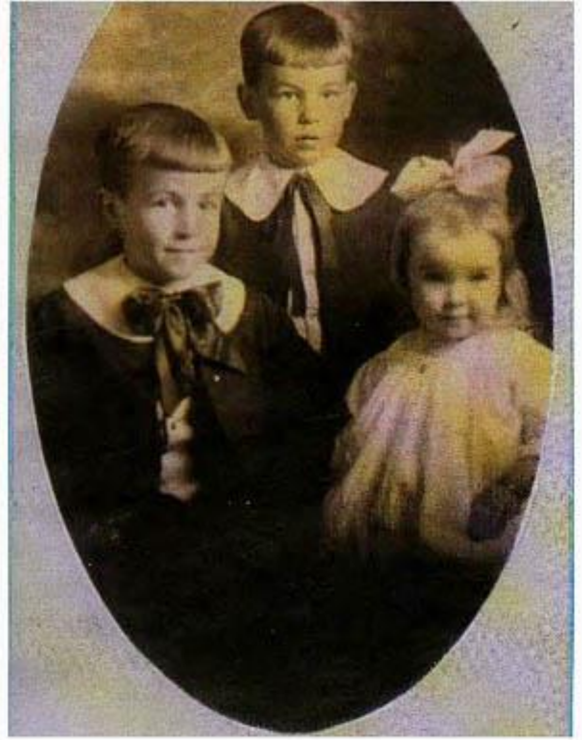
क्लारा जिन घायल सैनिकों की तीमारदारी करती थीं, उनके तकियों के पास फूलों का छोटा सा गुलदस्ता रखा करती थीं। उन्होंने जिन नर्सों को प्रशिक्षित किया उन्हें भी यह करना सिखाया। जब क्लारा को किसी सैनिक के परिवार को यह सूचना देनी होती कि वे अपने प्रियजन को युद्ध में खो चुके हैं, वे अपने पत्र के साथ हमेशा सूखे फूलों का एक गुच्छा संलग्न करतीं।

मीटीयोर रिज फार्म, युनियन सिटी, मिशिगन में जहाँ मैं रहती हूँ, मेरे शयन कक्ष में चाँदी से बना एक पुराना गुलदान है, जो टसी-मसी कहलाता है।

किसीको भेंट किए जाने वाले फूलों के छोटे गुच्छे को भी टसी-मसी कहा जाता था।







मेरी माँ और उनके दो छोटे भाई बचपन में। बांए से दाहिने मेरे मामा जॉर्ज-गा, रिचर्ड-गा, और मेरी माँ मेरी एलन-गा।

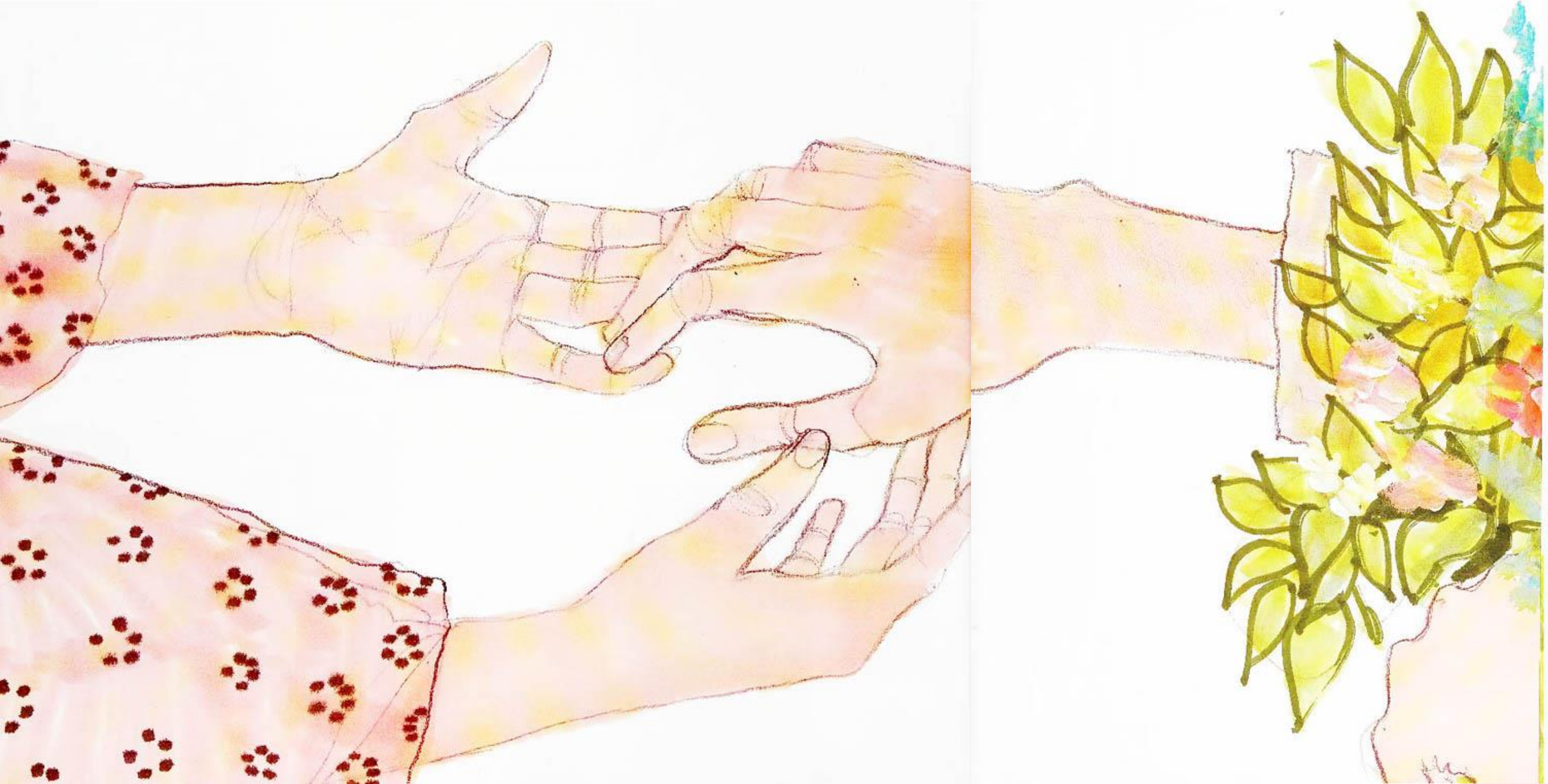


मेरे परिवार के अनुसार चाँदी का यह गुलदान क्लारा बार्टन का है। मेरे मातृपक्ष में विवाह के रिश्ते से मैं क्लारा की रिश्तेदार हूँ। मेरे मामा-मामी ने अपने दोनों बच्चों को क्लारा के पिता और भाइयों का नाम दिया।

उनके बड़े बेटे स्टीवन बार्टन-गा का नाम क्लारा के पिता और बड़े भाई के नाम पर रखा गया। मेरा यह ममेरा भाई पशु-चिकित्सक बना और उसे भी पशुओं का उपचार करना उतना ही पसन्द था जितना क्लारा को था। उसके छोटे भाई डेविड बार्टन-गा का नाम क्लारा के सबसे प्यारे भाई डेवी के नाम पर रखा गया। डेविड की इतिहास में दिलचस्पी है, और वह आज तक परिवार की सूचनाओं को दर्ज करता है। मेरे परिवार के सभी सदस्यों को क्लारा बार्टन से अपने संबंध पर गर्व है।



मेरे ममेरे भाई डेविड बार्टन-गा और स्टीवन बार्टन-गा।



पैट्रिशिया पोलाको विख्यात लेखिका और चित्रकार हैं। उनकी पुस्तकें बड़ी संख्या में बिकती हैं। उन्होंने तकरीबन सौ बाल-पुस्तकों की रचना की है, जिनमें *द कीपिंग क्विल्ट, पिंक एण्ड से, थैंक यू मिस्टर फॉल्कर,* शामिल हैं।

मिस पोलाको की कई किताबें उनके बचपन की वास्तविक घटनाओं और उनके परिवार के ऐतिहासिक वृत्तान्तों पर आधारित हैं। *क्लारा एण्ड डेवी* की शुरुआत भी ठीक इसी तरह हुई थी।

जब मिस पोलाको छोटी थीं उन्होंने उस शर्मीली क्लारा के तमाम किस्से सुने, जिसे "दूसरे बच्चों से दोस्ती करने में तो दिक्कत होती थी," पर जो "पशुओं और फूलों में आसानी से दोस्त तलाश लेती थी।" क्लारा की ही तरह मिस पोलाको को भी स्कूल में संघर्ष करना पड़ा और अपने शर्मीलेपन के कारण वे भी दूसरों की मखौल का लक्ष्य बनीं। क्लारा की ही तरह मिस पोलाको का भी पशुओं के साथ एक ख़ास तरीका है। वे युनियन सिटी, मिशि[गन में बकरियों, भेड़ों, बिल्लियों और एक सब्ज़ी बागान के साथ रहती हैं। अपने बागान में वे टमाटर, स्वाश (एक तरह का कुम्हड़ा), और रूबार्ब (पौधा जिसकी डंठल मीठी होती है) उगाती हैं।

